माध्यमिक स्तर पर शिक्षक छात्र अन्तःक्रिया का विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं अधिगम क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अवलोकन

संगीता खरे[1], डॉ. सरोज जैन[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, आईसेक्ट विष्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत.
[2]प्राचार्या, विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजुकेषन, भोपाल (म.प्र.) भारत.

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देष्य षिक्षक छात्र अन्तः क्रिया का विधार्थी की अधिगम क्षमता एवं उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव पर किये गये विभिन्न का अध्ययन करना है। संबंधित प्रकाषित अप्रकाषित शोध–पत्र,पत्र–पत्रिकाओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कक्षा षिक्षण अन्तः क्रिया पर अनेक शोध हुए है। पूर्ववर्ती कार्यो मे जो शोध हुआ है उसके अनुसार कक्षा व्यवहार, षिक्षक व्यवहार, शैक्षिक निष्पत्ति, छात्रो की उपलब्धि में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। इनसे संबंधित समस्याए कुछ कम भी हुई है। यदि षिक्षक के षिक्षण में छात्रों के विचारों को स्थान दिया जाए उनकी प्रषंसा की जाए षिक्षक कथन एवं छात्र कथन की मात्रा समान हो तो शैक्षिक प्रक्रिया लचीली बनी रहती है। इसके लिए षिक्षक को भी कक्षा के अनुरूप अपने आपको ढालकर छात्रों के साथ मित्रवत् व्यवहार करना चाहिये। षिक्षक छात्र अंतः क्रिया की मात्रा को और बढाया जाने की आवष्यकता है जिससे कि षिक्षक बच्चों की जिज्ञासाओ का विभिन्न विधियों से समाधान कर सकें। अन्तः क्रिया में षिक्षक और छात्र दोनो की सक्रिय भूमिका होना चाहिये।

मुख्य बिंदु :– छात्र षिक्षक अन्तःक्रिया,अधिगम क्षमता, उपलब्धि।

I प्रस्तावना

षिक्षा मानव की मूल साधना है इसके द्वारा ही मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास करके उसके ज्ञान और कौषल में वृद्धि एवम् व्यवहार परिवर्तन किया जाता है। उसे सभ्य और सुसंस्कृत नागरिक बनाया जाता है। षिक्षा के द्वारा बालक का संर्वागीण विकास होता है, इस संदर्भ में कुछ षिक्षाविदों का कथन गौरतलब है

जॉन लॉक – जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिये भोजन का महत्व है, उसी प्रकार मनुष्य का विकास षिक्षा के द्वारा होता है।

जॉन ड्यूवी – जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिये भोजन का महत्व है, उसी प्रकार उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिये षिक्षा का।

जे.एस. मेकेन्जी – षिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन पर्यन्त चलती है जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसमें वृद्धि होती है।

षिक्षा एक साधन है जो आंतरिक गुणों को प्रखर बनाती है। अर्थात षिक्षा बालक के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक बौद्धिक एवं आंतरिक शक्तियों को बाहर लाने की योग्यषील प्रक्रिया है।

जॉन ड्यूवी – षिक्षा के दो ध्रुव हैं (1) मनोवैज्ञानिक (2) सामाजिक।

मनोवैज्ञानिक से तात्पर्य सिखने सिखाने की रूचि रूझान से है जबकि सामाजिक से तात्पर्य सामाजिक पर्यावरण से है। आज छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि हेतु षिक्षकों के साथ अन्तःक्रिया करना बहुत आवष्यक हो गया है क्योंकि इससे वह अपने ज्ञान दृष्टिकोणों व जीवन मूल्यों को कार्य रूप में परिणित करने योग्य बनाता है। छात्रों द्वारा षिक्षक से जो प्रष्न पूछे जाते हैं उससे उनमें ज्ञानात्मक विकास होता है और निष्पत्ति का स्तर ऊँचा उठता है। इसलिये षिक्षक को कक्षा का वातावरण उन्नत बनाना चाहिये। षिक्षक को मित्रवत व्यवहार करना चाहिये। छात्रों में षिक्षक के समक्ष अपनी बात को अभिव्यक्त करने की क्षमता एवं विचारों की स्पष्टता जितनी अधिक होगी उतना ही छात्रों में ज्ञान विकसित होगा।

षिक्षण के समय षिक्षक कथन तथा छात्र कथन समान मात्रा में होना चाहिये, जिससे शैक्षिक प्रक्रिया लचीली बनी रहती है।

षिक्षक छात्र अन्तःक्रिया विष्लेषण से छात्रों के शाब्दिक व्यवहार में सार्थक परिवर्तन होता है। अप्रत्यक्ष षिक्षण व्यवहारों में परिवर्तन होता है। उनमें छात्रों की भावनाओं को स्वीकारने, प्रोत्साहित करने की प्रवृत्ति में वृद्धि का विकास होता है। अन्तःक्रिया से छात्रों पर जो प्रभाव है उनमें से एक है यह छात्रों की समझ क्षमता को बढ़ा देता है। प्रत्यक्ष व्यवहार करने से कक्षा में मौन की स्थिति लघु प्रष्नों में बदल जाती है। अप्रत्यक्ष व्यवहार करने वाले षिक्षक धनात्मक अभिवृत्ति वाले होते हैं। छात्रों के अध्ध्यन संबंधि कौषल से हर तरह की निष्पत्ति का स्तर ऊँचा उठता है। फ्लैण्डर ने षिक्षक छात्र अन्तःक्रिया का प्रयोग षिक्षण प्रभाव व छात्र उपलब्धि के लिये किया था। यह प्रविधि शाब्दिक व्यवहार एवं कक्षागत संप्रेक्षण के लिये प्रयोग की जाती है। कक्षा का शाब्दिक व्यवहार का निरीक्षण अधिक विष्वसनीयता के साथ किया जा सकता है।

II साहित्य समीक्षा

किसी भी क्षेत्र में अध्ययन करने से पूर्व उस समस्या के क्षेत्र विशेष से संबंधित ज्ञान भलीभाँति परिचित होना आवष्यक है तथा संबंधित साहित्य समीक्षा कर निष्कर्षो से परिचित होना पूर्ववर्ती प्रमुख कार्यो के निष्कषो को यहां प्रस्तुत किया गया है:–

(क) उदय पारीक वैकटेश्वर 1976

(i) **उद्देश्य** – दिल्ली के षिक्षकों पर कक्षा अन्तःक्रिया एवं कक्षा वातावरण के संदर्भ में अध्ययन करना।

(ii) **निष्कर्ष** – अध्ययन में पाया गया 62 प्रतिषत षिक्षक भाषण देने में समय व्यतीत करते हैं। 4प्रतिषत समय छात्रों को प्रोत्साहित करने व प्रषंसा करने में व्यतीत हुआ, 13प्रतिषत छात्रों का समय छात्र कथन में व्यतीत होता है।

(ख) जंगीरा 1970

(i) **उद्देश्य** – षिक्षण प्रषिक्षण में प्रक्रिया अन्तःक्रिया विष्लेषण विधि एवं परंपरागत विधि का तुल्नात्मक अध्ययन करना।

(ii) **निष्कर्ष** – अन्तःक्रिया विष्लेषण पद्धति विष्लेषण द्वारा प्रषिक्षार्थियों के शाब्दिक व्यवहार में सार्थक अंतर पाया गया। इनका व्यवहार अधिक छात्रोंन्मुख था।

(ग) NCERT 1973

(i) **उद्देश्य** – विष्वविद्यालयीन षिक्षकों की छात्र अन्तःक्रिया पर अभिन्यास कार्यक्रम में षिक्षकों को फ्लैण्डर्स अन्तःक्रिया वर्ग पद्धति का प्रषिक्षण दिया गया तथा यह पाया गया कि जिन्हें प्रषिक्षण दिया गया तथा जिन्हें प्रषिक्षण नहीं दिया गया दोनों समूह की छात्र अन्तःक्रिया में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(घ)वशिष्ठ 1975

(i) **उद्देश्य** – प्रयोगात्मक परिस्थितियों में शाब्दिक अन्तःक्रिया प्रविधि का प्रषिक्षण देकरगणित विज्ञान के प्रषिक्षुओं का कक्षा अन्तःक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

(ii) **निष्कर्ष** – अध्ययन में पाया गया कि फ्लैण्डर्स अन्तःक्रिया प्रषिक्षण कक्षा में छात्रों की निष्पादन क्षमता को बढ़ा देता है।

(च) हिरूवाल 1980

(i) **उद्देश्य** – गुजरात के निजी एवं मिषनरीज विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा कक्षा वातावरण और शैक्षिक कार्यों का तुल्नात्मक अध्ययन करना।

(ii) **निष्कर्ष** – अध्ययन में पाया गया कि केन्द्रीय व निजी विद्यालयों की अपेक्षा मिषनरीज विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा अधिक होती है व अन्य चरों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

(छ) जोगलेकर 1982

(i) **उद्देश्य** – बंबई के कक्षा आठवीं पढ़ाने वाले अध्यापकों के कक्षा षिक्षण व्यवहार का अध्ययन करना कक्षा निरीक्षण के लिये FIACS का प्रयोग किया।

(ii) **निष्कर्ष** – अधिकांष छात्राध्यापकों का कक्षा षिक्षण व्यवहार प्रत्यक्ष रहा। विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापक अपेक्षाकृत अधिक अप्रत्यक्ष व्यवहार प्रदर्षित करते हैं।

(ज) सिंह हरमिन्दर (1989)

(i) **उद्देश्य** – सेवारत माध्यमिक षिक्षकों की कक्षा अन्तःक्रिया पर FIACS के प्रषिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।

(ii) **निष्कर्ष** – इसमें पाया गया कि प्रषिक्षित षिक्षक कक्षा में शाब्दिक व्यवहार का प्रयत्न करने लगे जबकि अप्रषिक्षितों का शाब्दिक व्यवहार प्रत्यक्ष ही था।

(झ) त्रिपाठी एच.एस. 1993

(i) **उद्देश्य** – नवोदय विद्यालय में कक्षा अन्तःक्रिया का छात्रों की वृद्धि, उपलब्धि, सृजनषीलता एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन का प्रभाव ज्ञात करना।

(ii) **निष्कर्ष** – अधिक षिक्षक कथन एवं कम षिक्षक कथन करने वाले अध्यापकों की छात्रों की वृद्धिलब्धि, सृजनषीलता में सार्थक अंतर पाया गया।

(ट) कुलकर्णी 1999

(i) **उद्देश्य** – प्रषिक्षण में षिक्षकों के कक्षागत व्यवहार का अध्ययन करना।

(ii) **निष्कर्ष** – सामान्य व्याख्यान दक्षता, श्यामपट कौषल षिक्षक का व्यक्तित्व खड़े होने का तरीका तथा विषय गत ज्ञान कक्षा अन्तःक्रिया में सुधार कर देता है।

(ठ) प्रमोद कुमार 2003

(i) **उद्देश्य** – अधिक प्रभावषील एवं कम प्रभावषील षिक्षकों की कक्षा में शाब्दिक अन्तःक्रिया के स्वरूप का अध्ययन करना।

(ii) **निष्कर्ष** – अध्ययन में पाया गया कि अधिक प्रभाव छात्र षिक्षकों में कम प्रभावषील षिक्षकों की अपेक्षा अन्तःक्रिया अधिक पाई जाती है।

(ड) अहमद सिन्हा (2008)

(i) उद्देष्य – किषोरो की शैक्षिक निष्पत्ति पर गृह के अनुकूल या प्रतिकूल वातावरण या अभिभावको के सकारात्मक और नकारात्मक शैक्षिक दृष्टिकोण का किषोरो की शैक्षिक निष्पत्ति संबंध होता है।

(ii) निष्कर्ष प्रषिक्षित षिक्षक अप्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार करने लगे तथा अषिक्षित षिक्षको का व्यवहार प्रत्यक्ष था

(ढ) M.D nor mubin –2001

Influence of teacher student interaction in the classroom behavior on academic and student motivation in teacher training in Malaysia.

(i) **Finding –** There is a positive significant relationship between the dimensions of the resistance of learning goals.

III समीक्षा तथा निष्कर्ष

कक्षा अंत : क्रिया विष्लेषण पर कई शोध कार्य हुऐ जिसमें कक्षा व्यवहार को मुख्य अध्ययन क्षेत्र बनाया गया। अधिकतर शोध में पाया गया कि षिक्षक अप्रत्यक्ष व्यवहार की अपेक्षा प्रत्यक्ष व्यवहार ज्यादा प्रदर्षित करते है। पूर्व में इससे संबंधित जो भी अनुसंधान हुए है वो यह दर्षाते है कि षिक्षक व छात्र का कक्षा के दौरान अन्तःक्रिया का प्रतिषत सैद्धांतिक रूप से कम है। अन्तःक्रिया एक तरफा होती है छात्र की तरफ से प्रतिक्रिया का अभाव होता है। षिक्षक–छात्र अन्तःक्रिया के दौरान अन्तःक्रिया को और बढाया जाना चाहिए। आज विद्यालय में संवादात्मक कार्यप्रणाली की आवष्यकता है शीघ्र ही इसे लागू कर अमल में लाना समय की बड़ी जरूरत है।

पहले के छात्रो की तुलना में अभी के छात्रों की प्रवृत्तियो में काफी बदलाव आया है आज वैष्वीकरण के परिमंडल में लोगो की जिज्ञासाए बढी है छात्रों का उन्मुखीकरण बदला है। जिसकी पूर्ति संवादात्मकता से संभव है क्योकि छात्रों एवं षिक्षको में सामाजिक विकास के साथ साथ स्वभावगत परिवर्तन भी आए हैं। षिक्षक छात्र अन्तः क्रिया को दोनो ओर से सक्रियकरने के लिए यह मूल्याकंन महत्वपूर्ण है। यदि षिक्षक छात्र अन्तःक्रिया होगी तो छात्र तर्क वितर्क करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचकर अपनी जिज्ञासा शांत कर सकेंगें। इसका प्रभाव छात्रों की उपलब्धि एवं अधिगम क्षमता पर भी देखने को मिलेगा। वर्तमान समय में षिक्षक छात्रों से संबंधित अनेक समस्याए जिनमें षिक्षक का व्यवहार, षिक्षक कक्ष वातावरण अभिप्रेरणा का मिलन स्तर षिक्षण तकनीक, संप्रेषण व्यवहार, षिक्षण की प्रतिकूल मनोवृत्ति, अव्यवस्थित अस्पष्ट प्रष्नो का छात्रो के अनुरूप न होना इत्यादि सम्मिलित हैं। इन सबका समाधान विचारो के आदान–प्रदान के बिना संभव नही है।

षिक्षक छात्र अंतः क्रिया के द्वारा इन समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है तथा इनका विष्लेषण भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

[1] यू.जी.सी. नेट, आर लाल बुक डिपो मेरठ

[2] मंगल एस.के. एवं पाठक पी.डी. (2011 षिक्षा मनोविज्ञान अग्रवाल पब्लिकेषन)

[3] जोशी डा. मिसेज मणि 2015 नयी षिक्षा पद्धति ISSN No 2393–8153 issue रानी अग्रवाल आगरा

[4] उदय पारीक टी.वैकटैष्वर राव 1970 की पैटर्न ऑफ क्लासरूम इन्फलुएस बिहेवियर ऑफ क्लास 5 टीचर्स ऑफ देहली इंडियन एजूकेषन रिव्यु 5 पृ. 55 से 70

[5] प्रमोद कुमार (2003) अधिक प्रभावषाली एवं कम प्रभावषाली षिक्षक की शाब्दिक अन्तःक्रिया के स्वरूप का अध्ययन पी.एच.डी. थीसिस चौधरी चरणसिंह विष्वविद्यालय मेरठ

[6] त्रिपाठी हरिषंकर 2005 प्रजातांत्रिक एवं अप्रजातांत्रिक अध्यापको की कक्षा व्यवहारो का अन्तःक्रिया के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन" एम. एड. डिजर्टेषन गोरखपुर विष्वविद्यालय गोरखपुर

[7] जंगीरा एन.क. 1972 classroom behaviours and training of teacher and its relation with some selected measiues of public criteria of teacher effectiveness unpublished Ph.D thesis education MSUniversity Baroda

[8] Singh harminder (1989) the effect of training through flanders interaction analysis techniques on classroom behavior in service secondary school. Punjab university refreed in Vth survey of education research NCERT 1988 P 1487.

[9] M.D nor Mubin 2001 influence of teacher student interaction in the classroom behavior on academic and student motivation in teacher training in Malaysia. Academic research international.

[10] अहमद & सिन्हा (2008) किषोरो की शैक्षिक निष्पत्ति पर गृह के अनुकूल एवम् प्रतिकूल वातावरण के प्रभाव का अध्ययन–भारतीय षिक्षाषोध पत्रिका लखनऊ वर्ष 17, अंक 2 जुलाई दिसम्बर।

[11] Aashistha K.K. (1975) – "An experimental study of change in some characteristics and verbal behavior of secondary science and mathematics student teacher through the training in verbal interaction techniques" unpublished Ph.D thesis submitted to meerut University.

[12] Joglekar S.V. 1981 – study of the P'11 tern of influence of fifth grade teacher of greater Bombay" PhD Education. Bombay University.